2 कुरिन्थियों

1 परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु के प्रेरित पौलुस
तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से कुरिन्थुस
परमेश्वर की कलीसिया तथा अखाया के समूचे क्षेत्र
के पवित्र जनों के नाम:
2हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर
धन्य है। वह करुणा का स्वामी है और आनन्द का स्रोत
है। 4हमारी हर विपत्ति में वह हमें शांति देता है ताकि
हम भी हर प्रकार की विपत्ति में पड़े लोगों को वैसे ही
शांति दे सकें, जैसे परमेश्वर ने हमें दी है। 5क्योंकि जैसे
मसीह की यातनाओं में हम सहभागी हैं, वैसे ही मसीह
के द्वारा हमारा आनन्द भी तुम्हारे लिये उमड़ रहा है।
6यदि हम कष्ट उठाते हैं तो वह तुम्हारे आनन्द और
उद्धार के लिए है। यदि हम आनन्दित हैं तो वह तुम्हारे
आनन्द के लिये है। यह आनन्द उन्हीं यातनाओं को
जिन्हें हम भी सह रहे हैं तुम्हें धीरज के साथ सहने को
प्रेरित करता है। 7तुम्हारे विषय में हमें पूरी आशा है
क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे हमारे कष्टों को तुम
बँटाते हो, वैसे ही हमारे आनन्द में भी तुम्हारा भाग है।

8हे भाइयो, हम यह चाहते हैं कि तुम उन यातनाओं
के बारे में जानो जो हमें एशिया में झेलनी पड़ी थीं। वहाँ
हम, हमारी सहन शक्ति की सीमा से कहीं अधिक बोझ
के तले दब गये थे। यहाँ तक कि हमें जीने तक की
कोई आशा नहीं रह गयी थी। 9हाँ अपने–अपने मन में
हमें ऐसा लगता था जैसे हमें मृत्यु–दण्ड दिया जा चुका है
ताकि हम अपने आप पर और अधिक भरोसा न रख
कर उस परमेश्वर पर भरोसा करें जो मरे हुए को भी
फिर से जिला देता है। 10हमें उस भयानक मृत्यु से उसी
ने बचाया और हमारी वर्तमान परिस्थितियों में भी वही
हमें बचाता रहेगा। हमारी आशा उसी पर टिकी है। वही
हमें आगे भी बचाएगा। 11यदि तुम भी हमारी ओर से
प्रार्थना करके सहयोग दोगे तो हमें बहुत से लोगों की
प्रार्थनाओं द्वारा परमेश्वर का जो अनुग्रह मिला है,
उसके लिये बहुत से लोगों को हमारी ओर से धन्यवाद
देने का कारण मिल जायेगा।

पौलुस की योजनाओं में परिवर्तन

12हमें इसका गर्व है कि हम यह बात साफ मन से
कह सकते हैं कि हमने इस जगत के साथ और
खासकर तुम लोगों के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के
अनुरूप व्यवहार किया है। हमने उस सरलता और
सच्चाई के साथ व्यवहार किया है जो परमेश्वर से
मिलती है न कि दुनियावी बुद्धि से। 13हाँ। इसीलिये हम
उसे छोड़ तुम्हें बस और कुछ नहीं लिख रहे हैं, जिससे
तुम हमें पूरी तरह वैसे ही समझ लोगे। 14जैसे तुमने हमें
आंशिक रूप से समझा है। तुम हमारे लिये वैसे ही गर्व
कर सकते हो जैसे हम तुम्हारे लिये उस दिन गर्व करेंगे
जब हमारा प्रभु यीशु फिर आयेगा।

15और इसी विश्वास के कारण मैंने पहले तुम्हारे
पास आने की ठानी थी ताकि तुम्हें दोबारा से आशीर्वाद
का लाभ मिल सके। 16मैं सोचता हूँ कि मकिदुनिया
जाते हुए तुमसे मिलूँ और जब मकिदुनिया से लौटूँ तो
फिर तुम्हारे पास जाऊँ। और फिर, तुम्हारे द्वारा ही
यहूदिया के लिये विदा किया जाऊँ। 17मैंने जब ये योजनाएँ
बनायी थीं, तो मुझे कोई संशय नहीं था। या मैं जो
योजनाएँ बनाता हूँ तो क्या उन्हें सांसारिक ढंग से बनाता
हूँ कि एक ही समय "हाँ, हाँ" भी कहता रहूँ और "ना,
ना" भी करता रहूँ।

18परमेश्वर विश्वसनीय है और वह इसकी साक्षी
देगा कि तुम्हारे प्रति हमारा जो वचन है एक साथ "हाँ"
और "ना" नहीं कहता। 19क्योंकि तुम्हारे बीच जिस
परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का हमने, यानी सिलवानुस,
तिमुथियुस और मैंने, प्रचार किया है, वह "हाँ" और
"ना" दोनों एक साथ नहीं है बल्कि उसके द्वारा एक
चिरन्तन "हाँ" की ही घोषणा की गयी है। 20क्योंकि
परमेश्वर ने जो अनन्त प्रतिज्ञाएँ की हैं, वे यीशु में सब
के लिए "हाँ" बन जाती हैं। इसीलिये हम उसके द्वारा भी
जो "आमीन" कहते हैं, वह परमेश्वर की ही महिमा के
लिये होता है।

21वह जो तुम्हें मसीह के व्यक्ति के रूप में हमारे साथ
सुनिश्चित करता है और जिसने हमें भी अभिशिक्त
किया है वह परमेश्वर ही है।

22जिसने हम पर अपने स्वामित्व की मुहर लगायी
और हमारे भीतर बयाने के रूप में वह पवित्र आत्मा दी

जो इस बात का आश्वासन है कि जो देने का वचन उसने हमें दिया है, उसे वह हमें देगा।

23साक्षी के रूप में परमेश्वर की दुहाई देते हुए और अपने जीवन की शपथ लेते हुए मैं कहता हूँ कि मैं दोबारा कुरिन्थुस इसलिये नहीं आया था कि मैं तुम्हें पीड़ा से बचाना चाहता था। **24**इसका अर्थ यह नहीं है कि हम तुम्हारे विश्वास पर काबू पाना चाहते हैं। तुम तो अपने विश्वास में अड़िग हो। बल्कि बात यह है कि हम तो तुम्हारी प्रसन्नता के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं।

2 इसीलिए मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हें फिर से दुःख देने तुम्हारे पास न आऊँ। **2**क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुखी करूँगा तो फिर भला ऐसा कौन होगा जो मुझे सुखी करेगा? सिवाय तुम्हें जिन्हें मैंने दुःख दिया है। **3**यही बात तो मैंने तुम्हें लिखी है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँ तो जिनसे मुझे आनन्द मिलना चाहिये, उनके द्वारा मुझे दुःख न पहुँचाया जाये। क्योंकि तुम सब में मेरा यह विश्वास रहा है कि मेरी प्रसन्नता में ही तुम सब प्रसन्न होगे। **4**क्योंकि तुम्हें मैंने दुःख भरे मन और वेदना के साथ आँसू बहा-बहा कर यह लिखा है। पर तुम्हें दुःखी करने के लिये नहीं, बल्कि इस लिये कि तुम्हारे प्रति जो मेरा प्रेम है, वह कितना महान् है, तुम इसे जान सको।

बुरा करने वाले को क्षमा कर

5किन्तु यदि किसी ने मुझे कोई दुःख पहुँचाया है तो वह मुझे ही नहीं, बल्कि किसी न किसी मात्रा में तुम सब को पहुँचाया है। **6**ऐसे व्यक्ति को तुम्हारे समुदाय ने जो दण्ड दे दिया है, वही पर्याप्त है। **7**इसलिये तुम तो अब उसके विपरीत उसे क्षमा कर दो और उसे प्रोत्साहित करो ताकि वह कहीं बढ़े चढ़े दुःख में ही डूब न जाये। **8**इसीलिये मेरी तुमसे विनती है कि तुम उसके प्रति अपने प्रेम को बढ़ाओ। **9**यह मैंने तुम्हें यह देखने के लिये लिखा है कि तुम परीक्षा में पूरे उतरते हो कि नहीं और सब बातों में आज्ञाकारी रहोगे या नहीं। **10**किन्तु यदि तुम किसी को किसी बात के लिये क्षमा करते हो तो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ और जो कुछ मैंने क्षमा किया है (यदि कुछ क्षमा किया है) तो वह मसीह की उपस्थिति में तुम्हारे लिये ही किया है। **11**ताकि हम शैतान से मात न खा जायें। क्योंकि उसकी चालों से हम अनजान नहीं हैं।

पौलुस की अशांति

12जब मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये मैं त्रोवास आया तो वहाँ मेरे लिये प्रभु का द्वार खुला हुआ था। **13**अपने भाई तितुस को वहाँ न पा कर मेरा मन बहुत व्याकुल था। सो उनसे विदा लेकर मैं मकिदुनिया को चल पड़ा।

मसीह से विजय

14किन्तु परमेश्वर धन्य है जो मसीह के द्वारा अपने विजय-अभियान में हमें सदा राह दिखाता है। और हमारे द्वारा हर कहीं अपने ज्ञान की सुगंध फैलाता है। **15**क्योंकि उनके लिये, जो अभी उद्धार की राह पर हैं और उनके लिये भी जो विनाश के मार्ग पर हैं, हम मसीह की परमेश्वर को समर्पित मधुर भीनी सुगंधित धूप हैं **16**किन्तु उनके लिये जो विनाश के मार्ग पर हैं, यह मृत्यु की ऐसी दुर्गन्ध है, जो मृत्यु की ओर ले जाती है। पर उनके लिये जो उद्धार के मार्ग पर बढ़ रहे हैं, यह जीवन की ऐसी सुगंध है, जो जीवन की ओर अग्रसर करती है। किन्तु इस काम के लिए सुपात्र कौन हैं? **17**परमेश्वर के वचन को अपने लाभ के लिये, उसमें मिलावट करके बेचने वाले बहुत से दूसरे लोगों जैसे हम नहीं हैं। नहीं! हम तो परमेश्वर के सामने परमेश्वर की ओर से भेजे हुए व्यक्तियों के समान मसीह में स्थित होकर, सच्चाई के साथ बोलते हैं।

नयी वाचा

3 इससे क्या ऐसा लगता है कि हम फिर से अपनी प्रशंसा अपने आप करने लगे हैं? अथवा क्या हमें तुम्हारे लिये या तुमसे परिचय-पत्र लेने की आवश्यकता है? जैसा कि कुछ लोग करते हैं। निश्चय ही नहीं **2**हमारा पत्र तो तुम स्वयं हो जो हमारे मन में लिखा है, जिसे सभी लोग जानते हैं और पढ़ते हैं **3**और तुम भी तो ऐसा ही दिखाते हो मानो तुम मसीह का पत्र हो। जो हमारी सेवा का परिणाम है। जिसे स्याही से नहीं बल्कि सजीव परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है। जिसे पथरीली शिलाओं* पर नहीं बल्कि मनुष्य के हृदय पटल पर लिखा गया है।

4हमें मसीह के कारण परमेश्वर के सामने ऐसा दावा करने का भरोसा है। **5**ऐसा नहीं है कि हम अपने आप में इतने समर्थ हैं जो सोचने लगे हैं कि हम अपने आप से कुछ कर सकते हैं बल्कि हमें सामर्थ्य तो परमेश्वर से मिलता है। **6**उसी ने हमें एक नये करार का सेवक बनने योग्य ठहराया है। यह कोई लिखित संहिता नहीं है बल्कि आत्मा का वाचा है क्योंकि लिखित संहिता तो मारती है जबकि आत्मा जीवन देता है।

पौलुस की सेवा मूसा की सेवा से महान् है

7किन्तु वह सेवा जो मृत्यु से युक्त थी यानी व्यवस्था का विधान जो पत्थरों पर अंकित किया गया था उसमें इतना तेज था कि इस्राएल के लोग मूसा के उस तेजस्वी मुख को एकटक न देख सके। और यद्यपि उस का वह

शिलाओं परमेश्वर ने सिनाई पर्वत पर मूसा को जो व्यवस्था का विधान दिया था वह शिला पटलो पर लिखा हुआ था। देखें निर्गमन 24:12; 25:16

तेज बाद में क्षीण हो गया। 8फिर भला आत्मा से युक्त
सेवा और अधिक तेजस्वी क्यों नहीं होगी। 9और फिर
जब दोषी ठहराने वाली सेवा में इतना तेज है तो उस
सेवा में कितना अधिक तेज होगा जो धर्मी ठहराने वाली
सेवा है। 10क्योंकि जो पहले तेज से परिपूर्ण था वह अब
उस तेज के सामने जो उससे कहीं अधिक तेजस्वी है,
तेज रहित हो गया है। 11क्योंकि वह सेवा जिसका
तेजहीन हो जाना निश्चित था, वह तेजस्वी थी, तो जो
नित्य है, वह कितनी तेजस्वी होगी।

12अपनी इसी आशा के कारण हम इतने निर्भय हैं।
13हम उस मूसा के जैसे नहीं हैं जो अपने मुख पर पर्दा
डाले रहता था कि कहीं इस्राएल के लोग (यहूदी)
अपनी आँखें गड़ा कर जिसका विनाश सुनिश्चित था,
उस सेवा के अंत को न देख लें। 14किन्तु उनकी बुद्धि
जड़ हो गयी थी, क्योंकि आज तक जब वे उस पुराने
वाचा को पढ़ते हैं, तो वही पर्दा उन पर बिना हटाये पड़ा
रहता है। क्योंकि वह पर्दा बस मसीह के द्वारा ही हटाया
जाता है। 15आज तक जब जब मूसा का ग्रंथ पढ़ा जाता
है तो पढ़ने वालों के मन पर वह पर्दा पड़ा ही रहता है।
16किन्तु जब किसी का हृदय प्रभु की ओर मुड़ता है तो
वह पर्दा हटा दिया जाता है। 17देखो। जिस प्रभु की ओर
मैं इंगित कर रहा हूँ, वही आत्मा है। और जहाँ प्रभु की
आत्मा है, वहाँ छुटकारा है। 18सो हम सभी अपने खुले
मुख के साथ दर्पण में प्रभु के तेज का जब ध्यान करते
हैं तो हम भी वैसे ही होने लगते हैं और हमारा तेज
अधिकाधिक बढ़ने लगता है। यह तेज उस प्रभु से ही
प्राप्त होता है। यानी आत्मा से।

माटी के भाँडों में अध्यात्म का धन

4 क्योंकि परमेश्वर केअनुग्रह से यह सेवा हमें प्राप्त
हुई है, इसीलिये हम निराश नहीं होते। 2हमने तो
लज्जापूर्ण गुप्त कार्यो को छोड़ दिया है। हम कपट नहीं
करते और न ही हम परमेश्वर के वचन में मिलावट
करते हैं, बल्कि सत्य को सरल रूप में प्रकट करके
लोगों की चेतना में परमेश्वर के सामने अपने आप को
प्रशंसा के योग्य ठहराते हैं। 3जिस सुसमाचार का हम
प्रचार करते हैं, उस पर यदि कोई पर्दा पड़ा है तो यह
केवल उनके लिये पड़ा है, जो विनाश की राह पर चल
रहे हैं। 4इस युग के स्वामी (शैतान) ने इन अविश्वासियों
की बुद्धि को अंधा कर दिया है ताकि वे परमेश्वर के
साक्षात् प्रतिरूप मसीह की महिमा के सुसमाचार से फूट
रहे प्रकाश को न देख पायें। 5हम स्वयं अपना प्रचार
नहीं करते बल्कि प्रभु के रूप में मसीह यीशु का
उपदेश देते हैं। और अपने बारे में तो यही कहते हैं कि
हम यीशु के नाते तुम्हारे सेवक हैं। 6क्योंकि उसी
परमेश्वर ने, जिसने कहा था, "अंधकार से ही प्रकाश
चमकेगा" वही हमारे हृदयों में प्रकाशित हुआ है, ताकि
हमें यीशु मसीह के व्यक्तित्व में परमेश्वर की महिमा
के ज्ञान की ज्योति मिल सके।

7किन्तु हम जैसे मिट्टी के भाँडों में यह सम्पत्ति इसलिये
रखी गयी है कि यह अलौकिक शक्ति हमारी नहीं;
बल्कि परमेश्वर की सिद्ध हो। 8हम हर समय हर
किसी प्रकार से कठिन दबावों में जीते हैं, किन्तु हम
कुचले नहीं गये हैं। हम घबराये हुए हैं किन्तु निराश
नहीं हैं। 9हमें यातनाएँ दी जाती हैं किन्तु हम छोड़े नहीं
गये हैं। हम झुका दिये गये हैं, पर नष्ट नहीं हुए हैं।
10हम सदा अपनी देह में यीशु की मृत्यु को हर कहीं
लिये रहते हैं। ताकि यीशु का जीवन भी हमारी देहों में
स्पष्ट रूप से प्रकट हो। 11यीशु के कारण हम जीवितों
को निरन्तर मौत के हाथों सौंपा जाता है ताकि यीशु का
जीवन भी नाशवान शरीरों में स्पष्ट रूप से उजागर हो।
12इसी से मृत्यु हममें और जीवन तुममें सक्रिय हैं।

13शास्त्र में लिखा है, "मैंने विश्वास किया था इसीलिये
मैं बोला।" हममें भी विश्वास की वही आत्मा है और
हम भी विश्वास करते हैं इसलिए हम भी बोलते हैं।
14क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को मरे
हुओं में से जिला कर उठाया, वह हमें भी उसी तरह
जीवित करेगा जैसे उसने यीशु को जिलाया था। और
हमें भी तुम्हारे साथ अपने सामने खड़ा करेगा। 15ये सब
बातें तुम्हारे लिये ही की जा रही हैं, ताकि अधिक से
अधिक लोगों में फैलती जा रही परमेश्वर का अनुग्रह,
परमेश्वर को महिमा मंडित करने वाले अधिकाधिक
धन्यवाद देने में प्रतिफलित हो सके।

विश्वास से जीवन

16इसलिए हम निराश नहीं होते। यद्यपि हमारे भौतिक
शरीर क्षीण होते जा रहे हैं, तो भी हमारी अंतरात्मा
प्रतिदिन नयी से नयी होती जा रही है। 17हमारा पल भर
का यह छोटा-मोटा दुःख एक अनन्त अतुलनीय महिमा
पैदा कर रहा है। 18जो कुछ देखा जा सकता है, हमारी
आँखें उस पर नहीं टिकी हैं, बल्कि अदृश्य पर टिकी
हैं। क्योंकि जो देखा जा सकता है, वह विनाशी है,
जबकि जिसे नहीं देखा जा सकता, वह अविनाशी है।

5 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी यह काया अर्थात्
यह तम्बू जिसमें हम इस धरती पर रहते हैं गिरा
दिया जाये तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग में एक
चिरस्थायी भवन मिल जाता है जो मनुष्य के हाथों बना
नहीं होता। 2सो हम जब तक इस आवास में हैं, हम
रोते-धोते रहते हैं और यही चाहते रहते हैं कि अपने
स्वर्गीय भवन में जा बसें। 3(निश्चय ही हमारी यह
धारणा है कि हम उसे पायेंगे और फिर बेघर नहीं
रहेंगे)। 4हममें से वे जो इस तम्बू यानी भौतिक शरीर में
स्थित हैं, बोझ से दबे कराह रहे हैं। कारण यह है कि
हम इन वस्त्रों को त्यागना नहीं चाहते बल्कि उनके ही

ऊपर उन्हें धारण करना चाहते हैं ताकि जो कुछ
नाशवान है, उसे अनन्त जीवन निगल ले। 5जिसने हमें
इस प्रयोजन के लिये ही तैयार किया है, वह परमेश्वर
ही है। उसी ने इस आश्वासन के रूप में कि अपने
वचन के अनुसार वह हमको देगा, बयाने के रूप में
हमें आत्मा दी है।

6हमें पूरा विश्वास है, क्योंकि हम जानते हैं कि जब
तक हम अपनी देह में रह रहे हैं, प्रभु से दूर हैं।
7क्योंकि हम विश्वास के सहारे जीते हैं। बस आँखों
देखी के सहारे नहीं। 8हमें विश्वास है, इसी से मैं कहता
हूँ कि हम अपनी देह को त्याग कर प्रभु के साथ रहने
को अच्छा समझते हैं। 9इसी से हमारी यह अभिलाषा है
कि हम चाहे उपस्थित रहें और चाहे अनुपस्थित, उसे
अच्छे लगते रहें। 10हम सब को अपने शरीर में स्थित
रह कर भला या बुरा, जो कुछ किया है, उसका फल
पाने के लिये मसीह के न्यायासन के सामने अवश्य
उपस्थित होना होगा।

परोपकारी परमेश्वर के मित्र होते हैं

11इसलिये प्रभु से डरते हुए हम सत्य को ग्रहण करने
के लिये लोगों को समझाते-बुझाते हैं। हमारे और
परमेश्वर के बीच कोई पर्दा नहीं है। और मुझे आशा है
कि तुम भी हमें पूरी तरह जानते हो। 12हम तुम्हारे
सामने फिर से अपनी कोई प्रशंसा नहीं कर रहे हैं।
बल्कि तुम्हें एक अवसर दे रहे हैं कि तुम हम पर गर्व
कर सको। ताकि, जो प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वस्तु पर
गर्व करते हैं, न कि उस पर जो कुछ उनके मन में है,
उन्हें उसका उत्तर मिल सके। 13क्योंकि यदि हम दीवाने
हैं तो परमेश्वर के लिये हैं और यदि सयाने हैं तो वह
तुम्हारे लिये हैं। 14हमारा नियन्ता तो मसीह का प्रेम है
क्योंकि हमने अपने मन में यह धार लिया है कि वह
एक व्यक्ति (मसीह) सब लोगों के लिये मरा। अत: सभी
मर गये। 15और वह सब लोगों के लिए मरा क्योंकि जो
लोग जीवित हैं, वे अब आगे बस अपने ही लिये न जीते
रहें, बल्कि उसके लिये जियें जो मरने के बाद फिर
जीवित कर दिया गया।

16परिणामस्वरूप अब से आगे हम किसी भी व्यक्ति
को सांसारिक दृष्टि से न देखें यद्यपि एक समय हमने
मसीह को भी सांसारिक दृष्टि से देखा था। कुछ भी हो,
अब हम उसे उस प्रकार नहीं देखते। 17इसीलिये यदि
कोई मसीह में स्थित है तो अब वह परमेश्वर की नयी
सृष्टि का अंग है। पुरानी बातें जाती रही हैं। सब कुछ
नया हो गया है 18और फिर ये सब बातें उस परमेश्वर
की ओर से हुआ करती हैं, जिसने हमें मसीह के द्वारा
अपने में मिला लिया है और लोगों को परमेश्वर से
मिलाप का काम हमें सौंपा है। 19हमारा संदेश है कि
परमेश्वर लोगों के पापों की अनदेखी करते हुए मसीह
के द्वारा उन्हें अपने में मिला रहा है और उसी ने मनुष्य
को परमेश्वर से मिलाने का संदेश हमें सौंपा है। 20इसीलिये
हम मसीह के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे हैं।
मानो परमेश्वर हमारे द्वारा तुम्हें चेता रहा है। मसीह की
ओर से हम तुमसे विनती करते हैं कि परमेश्वर के
साथ मिल जाओ।

21जो पाप रहित है, उसे उसने इसलिये पाप-बली
बनाया कि हम उसके द्वारा परमेश्वर के सामने नेक
ठहराये जायें।

6 परमेश्वर के कार्य में साथ-साथ काम करने के
नाते हम तुम लोगों से आग्रह करते हैं कि परमेश्वर
का जो अनुग्रह तुम्हें मिला है, उसे व्यर्थ मत जाने दो।
2क्योंकि उसने कहा है:

"मैंने उचित समय पर तेरी सुन ली, और मैं उद्धार
के दिन तुझे सहारा देना आया।" *यशायाह 49:8*

देखो "उचित समय" यही है। देखो "उद्धार का
दिन" यही है।

3हम किसी के लिए कोई विरोध उपस्थित नहीं करते
जिससे हमारे काम में कोई कमी आये। 4बल्कि परमेश्वर
के सेवक के रूप में हम हर तरह से अपने आप को
अच्छा सिद्ध करते रहते हैं। धैर्य के साथ सब कुछ सहते
हुए यातनाओं के बीच, विपत्तियों के बीच, कठिनाइयों
के बीच 5मार खाते हुए, बंदी गृहों में रहते हुए, अशांति
के बीच, परिश्रम करते हुए, रातों-रात पलक भी न
झपका कर, भूखे रह कर 6अपनी पवित्रता, ज्ञान और
धैर्य से, अपनी दयालुता, पवित्र आत्मा के वरदानों और
सच्चे प्रेम, 7अपने सच्चे संदेश और परमेश्वर की शक्ति
से नेकी को ही अपने दायें-बायें हाथों में ढाल के रूप में
लेकर 8हम आदर और निरादर के बीच अपमान और
सम्मान में अपने को उपस्थित करते रहते हैं। हमें ठग
समझा जाता है, यद्यपि हम सच्चे हैं। 9हमें गुमनाम
समझा जाता है, जबकि हमें सभी जानते हैं। हमें मरते
हुओं सा जाना जाता है, पर देखो हम तो जीवित हैं। हमें
दंड भोगते हुओं सा जाना जाता है, तब भी देखो हम मृत्यु
को नहीं सौंपे जा रहे हैं। 10हमें शोक से व्याकुल समझा
जाता है, जबकि हम तो सदा ही प्रसन्न रहते हैं। हम
दीन-हीनों के रूप में जाने जाते हैं, जबकि हम बहुत सों
को वैभवशाली बना रहे हैं। लोग समझते हैं हमारे पास
कुछ नहीं है, जबकि हमारे पास तो सब कुछ है।

11हे कुरिन्थियो, हमने तुमसे पूरी तरह खुल कर
बातें की हैं। तुम्हारे लिये हमारा मन खुला है। 12हमारा
प्रेम तुम्हारे लिये कम नहीं हुआ है। किन्तु तुमने हमसे
प्यार करना रोक दिया है। 13तुम्हें अपना बच्चा
समझते हुए मैं कह रहा हूँ कि उचित प्रतिदान के रूप
में अपना मन तुम्हें भी हमारे लिये पूरी तरह खुला
रखना चाहिये।

ग़ैर मसीहियों की संगत के विरुद्ध चेतावनी

14अविश्वासियों के साथ बेमेल संगत मत करो क्योंकि
नेकी और बदी की भला कैसी समानता? या प्रकाश
और अंधेरे में भला मित्रता कैसे हो सकती है? 15ऐसे ही
मसीह का शैतान से कैसा तालमेल? अथवा अविश्वासी
के साथ विश्वासी का कैसा साझा? 16परमेश्वर के
मंदिर का मूर्तियों से क्या नाता? क्योंकि हम स्वयं उस
सजीव परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने
कहा था :

"मैं उनमें निवास करूँगा; चलूँ–फिरूँगा, मैं उनका
परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे जन बनेंगे।

लैव्यव्यवस्था 26:11–12

17"इसीलिये तुम उनमें से बाहर आ जाओ, उनसे
अपने को अलग करो अब तुम कभी कुछ भी न छूओ
जो अशुद्ध है तब मैं तुमको अपनाऊँगा।"

यशायाह 52:11

18"और मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, तुम मेरे पुत्र और
पुत्री होवोगे, सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।"

2 शमूएल 7:14; 7:8

7 हे प्रिय मित्रो, क्योंकि हमारे पास ये प्रतिज्ञाएँ हैं।
इसलिये आओ, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा के कारण
हम अपनी पवित्रता को परिपूर्ण करते हुए अपने बाहरी
और भीतरी सभी दोषों को धो डालें।

पौलुस का आनन्द

2अपने मन में हमें स्थान दो। हमने किसी का भी
कुछ बिगाड़ा नहीं है। हमने किसी को भी ठेस नहीं
पहुँचाई है। हमने किसी के साथ छल नहीं किया है। 3मैं
तुम्हें नीचा दिखाने के लिये ऐसा नहीं कह रहा हूँ
क्योंकि मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ कि तुम तो हमारे मन
में बसते हो। यहाँ तक कि हम तुम्हारे साथ मरने को या
जीने को तैयार हैं। 4मैं तुम पर भरोसा रखता हूँ। तुम
पर मुझे बड़ा गर्व है। मैं सुख चैन से हूँ। अपनी सभी
यातनाएँ झेलते हुए मुझमें आनन्द उमड़ता रहता है।
5जब हम मकिदुनिया आये थे तब भी हमें आराम नहीं
मिला था, बल्कि हमें तो हर प्रकार के दुःख उठाने पड़े
थे बाहर झगड़ों से और मन के भीतर डर से। 6किन्तु
दीन दुखियों को सुखी करने वाले परमेश्वर ने तितुस
को यहाँ पहुँचा कर हमें सान्त्वना दी है। 7और वह भी
केवल उसके, यहाँ पहुँचने से नहीं बल्कि इससे हमें
और अधिक सान्त्वना मिली कि तुमने उसे कितना
सुख दिया था। उसने हमें बताया कि हमसे मिलने को
तुम कितने व्याकुल हो। तुम्हें हमारी कितनी चिंता हैं।
इससे हम और भी प्रसन्न हुए।

8यद्यपि अपने पत्र से मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया है किन्तु
फिर भी मुझे उस के लिखने का खेद नहीं हैं। चाहे
पहले मुझे इसका दुःख हुआ था किन्तु अब मैं देख रहा
हूँ कि उस पत्र से तुम्हें बस पल भर को ही दुःख पहुँचा
था। 9सो अब मैं प्रसन्न हूँ। इसलिये नहीं कि तुम को दुख
पहुँचा था बल्कि इसलिये कि उस दुःख के कारण ही
तुमने पछतावा किया। तुम्हें वह दुख परमेश्वर की ओर
से ही हुआ था ताकि तुम्हें हमारे कारण कोई हानि न
पहुँच पाये। 10क्योंकि वह दुख जिसे परमेश्वर देता है
एक ऐसे मनफिराव को जन्म देता है जिसके लिए पछताना
नहीं पड़ता और जो मुक्ति दिलाता है। किन्तु वह दुख जो
सांसारिक होता है, उससे तो बस मृत्यु जन्म लेती है।
11देखो। यह दुख जिसे परमेश्वर ने दिया है, उसने तुममें
कितना उत्साह जगा दिया है, अपने भोलेपन की कितनी
प्रतिरक्षा, कितना आक्रोश, कितनी आकुलता, हमसे
मिलने की कितनी बेचैनी, कितना साहस, पापी के प्रति
न्याय चुकाने की कैसी भावना पैदा कर दी है। तुमने
हर बात में यह दिखा दिया है कि इस बारे में तुम कितने
निर्दोष थे। 12सो यदि मैंने तुम्हें लिखा था तो उस व्यक्ति
के कारण नहीं जो अपराधी था और न ही उसके
कारण जिसके प्रति अपराध किया गया था। बल्कि इस
लिए लिखा था कि परमेश्वर के सामने हमारे प्रति
तुम्हारी चिंता का तुम्हें बोध हो जाये। 13इससे हमें प्रोत्साहन
मिला है। हमारे इस प्रोत्साहन के अतिरिक्त तितुस के
आनन्द से हम और अधिक आनन्दित हुए, क्योंकि तुम
सब के कारण उसकी आत्मा को चैन मिला है। 14तुम्हारे
लिए मैंने उससे जो बढ़ चढ़ कर बातें की थीं, उसके
लिए मुझे लजाना नहीं पड़ा है। बल्कि हमने जैसे तुमसे
सब कुछ सच–सच कहा था, वैसे ही तुम्हारे बारे में
हमारा गर्व तितुस के सामने सत्य सिद्ध हुआ है। 15वह
जब यह याद करता है कि तुम सब ने किस प्रकार
उसकी आज्ञा मानी और डर से थरथर काँपते हुए
तुमने कैसे उसको अपनाया तो तुम्हारे प्रति उसका प्रेम
और भी बढ़ जाता है। 16मैं प्रसन्न हूँ कि मैं तुममें पूरा
भरोसा रख सकता हूँ।

हमारा दान

8 देखो, हे भाइयो, अब हम यह चाहते हैं कि तुम
परमेश्वर के उस अनुग्रह के बारे में जानो जो
मकिदुनिया क्षेत्र की कलीसियाओं पर किया गया है।
2मेरा अभिप्राय यह है कि यद्यपि उनकी कठिन परीक्षा
ली गयी तो भी वे प्रसन्न रहे और अपनी गहन दरिद्रता
के रहते हुए भी उनकी सम्पूर्ण उदारता उमड़ पड़ी। 3मैं
प्रमाणित करता हूँ कि उन्होंने जितना दे सकते थे दिया।
इतना ही नहीं, बल्कि अपने सामर्थ्य से भी अधिक मन
भर के दिया। 4वे बड़े आग्रह के साथ संत जनों की
सहायता करने में हमें सहयोग देने को विनय करते

रहे। **5**उनसे जैसी हमें अपेक्षा थी, वैसे नहीं बल्कि पहले अपने आप को प्रभु को समर्पित किया और फिर परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल वे हमें अर्पित हो गये। **6**इसीलिये हमने तितुस से प्रार्थना की कि जैसे वह अपने कार्य का प्रारम्भ कर ही चुका है, वैसे ही इस अनुग्रह के कार्य को वह तुम्हारे लिये करे। **7**और जैसे कि तुम हर बात में यानी विश्वास में, वाणी में, ज्ञान में, अनेक प्रकार से उपकारकरने में और हमने तुम्हें जिस प्रेम की शिक्षा दी है उस प्रेम में, भरपूर हो, वैसे ही अनुग्रह के इस कार्य में भी भरपूर हो जाओ।

8यह मैं आज्ञा के रूप में नहीं कह रहा हूँ बल्कि अन्य व्यक्तियों के मन में तुम्हारे लिए जो तीव्रता है, उस प्रेम की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिये ऐसा कह रहा हूँ। **9**क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से तुम परिचित हो। तुम यह जानते हो कि धनी होते हुए भी तुम्हारे लिये वह निर्धन बन गया। ताकि उसकी निर्धनता से तुम मालामाल हो जाओ।

10इस विषय में मैं तुम्हें अपनी सलाह देता हूँ। तुम्हें यह शोभा देता है। तुम पिछले साल न केवल दान देने की इच्छा में सबसे आगे थे बल्कि दान देने में भी सबसे आगे रहे। **11**अब दान करने की उस तीव्र इच्छा को तुम जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी से पूरा करो। तुम इसे उतनी ही लगन से "पूरा करो" जितनी लगन से तुमने इसे "चाहा" था। **12**क्योंकि यदि दान देने की लगन है तो व्यक्ति के पास जो कुछ है, उसी के अनुसार उसका दान ग्रहण करने योग्य बनता है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है। **13**हम यह नहीं चाहते कि दूसरों को तो सुख मिले और तुम्हें कष्ट; बल्कि हम तो बराबरी चाहते हैं। **14**हमारी इच्छा है कि उनके इस अभाव के समय में तुम्हारी सम्पन्नता उनकी आवश्यकताएँ पूरी करे ताकि आवश्यकता पड़ने पर आगे चल कर उनकी सम्पन्नता भी तुम्हारे अभाव को दूर कर सके ताकि समानता स्थापित हो। **15**जैसा कि शास्त्र कहता है:

"जिसने बहुत बटोरा उसके पास अधिक न रहा;
और जिसने अल्प बटोरा, उसके पास स्वल्प न रहा।"

निर्गमन 16:18

तितुस और उसके साथी

16परमेश्वर का धन्यवाद है जिसने तितुस के मन में तुम्हारी सहायता के लिए वैसी ही तीव्र इच्छा भर दी है, जैसी हमारे मन में है। **17**क्योंकि उसने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और वह उसके लिए विशेष रूप से अपनी इच्छा भी रखता है, इसलिए वह स्वयं अपनी इच्छा से ही तुम्हारे पास आने को विदा हो रहा है। **18**हम उसके साथ उस भाई को भी भेज रहे हैं, जिसका सुसमाचार के प्रचार के रूप में सभी कलीसियाओं में हर कहीं यश फैल रहा है। **19**इसके अतिरिक्त इस दयापूर्ण कार्य में कलीसियाओं ने उसे हमारे साथ यात्रा करने को नियुक्त भी किया है। यह दया कार्य जिसका प्रबन्ध हमारे द्वारा किया जा रहा है, स्वयं प्रभु को सम्मानित करने के लिये और परोपकार में हमारी तत्परता को दिखाने के लिए है।

20हम सावधान रहने की चेष्टा कर रहे हैं इस बड़े धन के लिए जिसका प्रबन्ध कर रहे हैं, कोई हमारी आलोचना न करे। **21**क्योंकि हमें अपनी अच्छी साख बनाए रखने की चिंता है। न केवल प्रभु के आगे, बल्कि लोगों के बीचभी।

22और उनके साथ हम अपने उस भाई को भी भेज रहे हैं, जिसे बहुत से विषयों में और बहुत से अवसरों पर हमने परोपकार के लिए उत्सुक व्यक्ति के रुप में प्रमाणित किया है। और अब तो तुम्हारे लिये उसमें जो असीम विश्वास है, उससे उसमें सहायता करने का उत्साह और अधिक हो गया है।

23जहाँ तक तितुस का क्षेत्र है, तो वह तुम्हारे बीच सहायता कार्य में मेरा साथी और साथ साथ काम करने वाला रहा है। और जहाँ तक हमारे बन्धुओं का प्रश्न है, वे तो कलीसियाओं के प्रतिनिधि तथा मसीह के सम्मान हैं। **24**सो तुम उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण देना और तुम्हारे लिये हम इतना गर्व क्यों रखते हैं, इसे सिद्ध करना ताकि सभी कलीसिया उसे देख सकें।

साथियों की मदद करो

9 अब संतों की सेवा के विषय में: तुम्हें इस प्रकार लिखते चले जाना मेरे लिये आवश्यक नहीं है। **2**क्योंकि सहायता के लिये तुम्हारी तत्परता को मैं जानता हूँ और उसके लिए मकिदुनिया निवासियों के सामने यह कहते हुए मुझे गर्व है कि अखाया के लोग तो, पिछले साल से ही तैयार हैं और तुम्हारे उत्साह ने उन में से अधिकतर को कार्य के लिए प्रेरणा दी है। **3**किन्तु मैं भाइयों को तुम्हारे पास इसलिये भेज रहा हूँ कि तुम को लेकर हम जो गर्व करते हैं, वह इस बारे में व्यर्थ सिद्ध न हो। और इसलिये भी कि तुम तैयार रहो, जैसा कि मैं कहता आया हूँ। **4**नहीं तो जब कोई मकिदुनिया वासी मेरे साथ तुम्हारे पास आयेगा और तुम्हें तैयार नहीं पायेगा तो हम उस विश्वास के कारण जिसे हमने तुम्हारे प्रति दर्शाया है, लज्जित होंगे। (और तुम तो और भी अधिक लज्जित होगे।) **5**इसीलिये मैंने भाइयों से यह कहना आवश्यक समझा कि वे हमसे पहले ही तुम्हारे पास जायें और जिन उपहारों को देने का तुम पहले ही वचन दे चुके हो उन्हें पहले ही से उदारतापूर्वक तैयार रखें। इसलिये यह दान स्वेच्छापूर्वक तैयार रखा जाये न कि दबाव के साथ तुमसे छीनी गयी किसी वस्तु के रूप में।

6इसे याद रखो। जो थोरा बोता है, वह थिोरा ही
काटेगा और जिस की बुआई अधिक है, वह अधिक ही
काटेगा। 7हर कोई बिना किसी कष्ट के या बिना किसी
दबाव के, उतना ही दे जितना उसने मन में सोचा है।
क्योंकि परमेश्वर प्रसन्न-दाता से ही प्रेम करता है।
8और परमेश्वर तुम पर हर प्रकार के उत्तम वरदानों
की वर्षा कर सकता है जिससे तुम अपनी आवश्यकता
की सभी वस्तुओं में सदा प्रसन्न हो सकते हो और सभी
अच्छे कार्यों के लिये फिर तुम्हारे पास आवश्यकता से
भी अधिक रहेगा। 9जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

"वह मुक्त भाव से देता है, वह दीन जनों को देता है, और उसकी चिरउदारता सदा-सदा को बनी रहती है।"
भजन संहिता 112:9

10वह परमेश्वर ही बोने वाले को बीज और खाने
वाले को भोजन सुलभ कराता है। वही तुम्हें बीज देगा
और उसकी बढ़वार करेगा, उसी से तुम्हारे धर्म की
खेती फूलेगी फलेगी। 11तुम हर प्रकार से सम्पन्न बनाये
जाओगे ताकि तुम हर अवसर पर उदार बन सको।
तुम्हारी उदारता परमेश्वर के प्रति लोगों के धन्यवाद
को पैदा करेगी। 12दान की इस पवित्र सेवा से न केवल
पवित्र लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं बल्कि
परमेश्वर के प्रति अत्यधिक धन्यवाद का भाव भी
उपजता है। 13क्योंकि तुम्हारी इस सेवा से जो प्रमाण
प्रकट होता है, उससे संत जन परमेश्वर की स्तुति
करेंगे। क्योंकि यीशु मसीह के सुसमाचार में तुम्हारे
विश्वास की घोषणा से उत्पन्न हुई तुम्हारी आज्ञाकारिता
के कारण और अपनी उदारता के कारण उनके लिये
तथा दूसरे सभी लोगों के लिये तुम दान देते हो। 14और
वे भी तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हुए तुमसे मिलने की
तीव्र इच्छा करेंगे। तुम पर परमेश्वर के असीम अनुग्रह
के कारण 15उस वरदान के लिये जिसका बखान
नहीं किया जा सकता, परमेश्वर का धन्यवाद है।

पौलुस द्वारा अपनी सेवा का समर्थन

10 मैं, पौलुस, निजी तौर पर मसीह की कोमलता
और सहनशीलता को साक्षी करके तुमसे
निवेदन करता हूँ। लोगों का कहना है कि मैं जो तुम्हारे
बीच रहते हुए विनम्र हूँ किन्तु वही मैं जब तुम्हारे बीच
नहीं हूँ, तो तुम्हारे लिये निर्भय हूँ। 2अब मेरी तुमसे
प्रार्थना है कि जब मैं तुम्हारे बीच होऊँतो उसी विश्वास
के साथ वैसी निर्भयता दिखाने को मुझ पर दबाव मत
डालना जैसी कि मेरे विचार में मुझे कुछ उन लोगों के
विरुद्ध दिखानी होगी जो सोचते हैं कि हम एक संसारी
जीवन जीते हैं। 3क्योंकि यद्यपि हम भी इस संसार में ही
रहते हैं किन्तु हम संसारी लोगों की तरह नहीं लड़ते हैं।
4क्योंकि जिन शस्त्रों से हम युद्ध लड़ते हैं, वे सांसारिक
नहीं हैं, बल्कि उनमें गढ़ों को तहस-नहस कर डालने
के लिए परमेश्वर की शक्ति निहित है। 5और उन्हीं
शस्त्रों से हम लोगों के तर्कों का और उस प्रत्येक
अवरोध का, जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध खड़ा है,
खण्डन करते हैं। 6जब तुममें पूरी आज्ञाकारिता है तो
हम हर प्रकार की अनाज्ञा को दण्ड देने के लिए तैयार
हैं।

7तुम्हारे सामने जो तथ्य हैं उन्हें देखो। यदि कोई
अपने मन में यह मानता है कि वह मसीह का है, तो
वह अपने बारे में फिर से याद करे कि वह भी उतना
ही मसीह का है जितना कि हम है। 8और यदि मैं अपने
उस अधिकार के विषय में कुछ और गर्व करूँ, जिसे
प्रभु ने हमें तुम्हारे विनाश के लिये नहीं बल्कि
आध्यात्मिक निर्माण के लिये दिया है। 9तो इसके लिये
मैं लज्जित नहीं हूँ। मैं अपने पर नियत्रण रखूँगा कि
अपने पत्रों के द्वारा तुम्हें भयभीत करने वाले के रूप में
न दिखूँ। 10मेरे विरोधियों का कहना है, "पौलुस के पत्र
तो भारी भरकम और प्रभावपूर्ण होते हैं। किन्तु मेरा
व्यक्तित्व दुर्बल, और वाणी अर्थहीन है।" 11किन्तु ऐसे
कहने वाले व्यक्ति को समझ लेना चाहिये कि तुम्हारे
बीच न रहते हुए जब हम अपने पत्रों में कुछ
लिखते हैं तो उसमें और तुम्हारे बीच रहते हुए हम
जो कर्म करते हैं उनमें कोई अन्तर नहीं है।

12हम उन कुछ लोगों के साथ अपनी तुलना करने
का साहस नहीं करते जो अपने आपको बहुत महत्त्वपूर्ण
मानते हैं। किन्तु जब वे अपने को एक दूसरे से नापते हैं
और परस्पर अपनी तुलना करते हैं तो वे यह दर्शाते हैं
कि वे नहीं जानते कि वे कितने मूर्ख हैं। 13जो भी हो,
हम उचित सीमाओं से बाहर बढ़ चढ़ कर बात नहीं
करेंगे, बल्कि परमेश्वर ने हमारी गतिविधियों की जो
सीमाएँ हमें सौंपी हैं, हम उन्हीं में रहते हैं और वे सीमाएँ
तुम तक पहुँचती हैं। 14हम अपनी सीमा का उल्लंघन
नहीं कर रहे हैं, जैसा कि यदि हम तुम तक नहीं पहुँच
पाते तो हो जाता। किन्तु तुम तक यीशु मसीह का
सुसमाचार लेकर हम तुम्हारे पास सबसे पहले पहुँचे हैं।
15अपनी उचित सीमा से बाहर जाकर किसी दूसरे व्यक्ति
के काम पर हम गर्व नहीं करते किन्तु हमें आशा है
कि तुम्हारा विश्वास जैसे जैसे बढ़ेगा तो वैसे वैसे ही
हमारी गतिविधियों के क्षेत्र के साथ तुम्हारे बीच हम भी
व्यापक रूप से फैलेंगे। 16इससे तुम्हारे क्षेत्र से आगे भी
हम सुसमाचार का प्रचार कर पायेंगे। किसी अन्य को
जो काम सौंपा गया था उस क्षेत्र में अब तक जो काम
हो चुका है हम उसके लिए शेखी नहीं बघारते। 17जैसा
कि शास्त्र कहता है: "जिसे गर्व करना है वह, प्रभु ने
जो कुछ किया है, उसी पर गर्व करे।"*

"जिसे … करे" यिर्म. 9:24

18क्योंकि अच्छा वही माना जाता है जिसे प्रभु अच्छा
स्वीकारता है, न कि वह जो अपने आप को स्वयं
अच्छा समझता है।

बनावटी प्रेरित और पौलुस

11 काश, तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता सह लेते। हाँ,
तुम उसे सह ही लो। 2क्योंकि मैं तुम्हारे लिये
ऐसी सजगता के साथ, जो परमेश्वर से मिलती है, सजग
हूँ। मैंने तुम्हारी मसीह से सगाई करा दी है ताकि तुम्हें
एक पवित्र कन्या के समान उसे अर्पित कर सकूँ।
3किन्तु मैं डरता हूँ कि कहीं जैसे उस सर्प ने हव्वा को
अपने कपट से भ्रष्ट कर दिया था, वैसे ही कहीं तुम्हारा
मन भी उस एकनिष्ठ भक्ति और पवित्रता से, जो हमें
मसीह के प्रति रखनी चाहिये, भटका न दिया जाये।
4क्योंकि जब कोई तुम्हारे पास आकर जिस यीशु का
उपदेश हमने तुम्हें दिया है, उसे छोड़ किसी दूसरे यीशु
का तुम्हें उपदेश देता है, अथवा जो आत्मा तुमने ग्रहण
की है, उससे अलग किसी और आत्मा को तुम ग्रहण
करते हो अथवा छुटकारे के जिस संदेश को तुमने
ग्रहण किया है, उससे भिन्न किसी दूसरे संदेश को भी
ग्रहण करते हो।

5तो तुम बहुत प्रसन्न होते हो। पर मैं अपने आप को
तुम्हारे उन "बड़े प्रेरितों" से बिलकुल भी छोटा नहीं
मानता। 6हो सकता है मेरी बोलने की शक्ति सीमित है
किन्तु मेरा ज्ञान तो असीम है। इस बात को हमने सभी
बातों में तुम्हें स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

7और फिर मैंने सेंत मेंत में सुसमाचार का उपदेश
देकर तुम्हें ऊँचा उठाने के लिये अपने आप को झुकाते
हुए, क्या कोई पाप किया है? 8मैंने दूसरी कलीसियाओं
से अपना पारिश्रमिक लेकर उन्हें लूटा है ताकि मैं
तुम्हारी सेवा कर सकूँ। 9और जब मैं तुम्हारे साथ था
तब भी आवश्यकता पड़ने पर मैंने किसी पर बोझ नहीं
डाला क्योंकि मकिदुनिया से आये भाइयों ने मेरी
आवश्यकताएँ पूरी कर दी थीं। मैंने हर बात में अपने
आप को तुम पर न बोझ बनने दिया है और न बनने
दूँगा। 10और क्योंकि मुझमें मसीह का सत्य निवास
करता है, इसलिये अखाया के समूचे क्षेत्र में मुझे बढ़
चढ़कर बोलने से कोई नहीं रोक सकता। 11भला क्यों?
क्या इसलिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? परमेश्वर
जानता है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

12किन्तु जो मैं कर रहा हूँ उसे तो करता ही रहूँगा;
ताकि उन तथाकथित प्रेरितों के गर्व को, जो गर्व करने
का कोई ऐसा बहाना चाहते हैं जिससे वे भी उन कामों
में हमारे बराबर समझे जा सकें जिनका उन्हें गर्व है; मैं
उनके उस गर्व को समाप्त कर सकूँ। 13ऐसे लोग नकली
प्रेरित हैं। वे छली हैं, वे मसीह के प्रेरित होने का ढोंग
करते हैं। 14इसमें कोई अचरज नहीं है, क्योंकि शैतान
भी तो परमेश्वर के दूत का रूप धारण कर लेता है।
15इसलिये यदि उसके सेवक भी नेकी के सेवकों का
सा रूप धर लें तो इसमें क्या बड़ी बात है? किन्तु अंत में
उन्हें अपनी करनी के अनुसार फल तो मिलेगा ही।

पौलुस की यातनाएँ

16मैं फिर दोहराता हूँ कि मुझे कोई मूर्ख न समझे।
किन्तु यदि फिर भी तुम ऐसे समझते हो तो मुझे मूर्ख
बनाकर ही स्वीकार करो। ताकि मैं भी कुछ गर्व कर
सकूँ। 17अब यह जो मैं कह रहा हूँ, वह प्रभु के
अनुसार नहीं कह रहा हूँ बल्कि एक मूर्ख के रूप में
गर्वपूर्ण विश्वास के साथ कह रहा हूँ। 18क्योंकि बहुत
से लोग अपने सांसारिक जीवन पर ही गर्व करते हैं।
19फिर तो मैं भी गर्व करूँगा। और फिर तुम तो इतने
समझदार हो कि मूर्खों की बातें प्रसन्नता के साथ सह
लेते हो। 20क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाये, तुम्हारा
शोषण करे, तुम्हें किसी जाल में फँसाये, अपने को तुमसे
बड़ा बनाये अथवा तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ मारे तो तुम
उसे सह लेते हो। 21मैं लज्जा के साथ कह रहा हूँ, हम
बहुत दुर्बल रहे हैं। (मैं मूर्खतापूर्वक कह रहा हूँ) यदि
कोई व्यक्ति किसी वस्तु पर गर्व करने का साहस
करता है तो वैसा ही साहस मैं भी करूँगा। 22इब्रानी वे
ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। इस्राएली वे ही तो नहीं हैं। मैं भी
हूँ। इब्राहीम की संतान वे ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। 23क्या
वे ही मसीह के सेवक हैं? (एक सनकी की तरह मैं यह
कहता हूँ) कि मैं तो उससे भी बड़ा मसीह का दास हूँ।
मैंने बहुत कठोर परिश्रम किया है। मैं बार बार जेल
गया हूँ। मुझे बार बार पीटा गया है। अनेक अवसरों पर
मेरा मौत से सामना हुआ है। 24पाँच बार मैंने यहूदियों से
एक कम चालीसचालीस कोड़े खाये हैं। 25मैं तीन–तीन
बार लाठियों से पीटा गया हूँ। एक बार तो मुझ पर
पथराव भी किया गया। तीन बार मेरा जहाज़ डूबा। एक
दिन और एक रात मैंने समुद्र के गहरे जल में बिताई।
26मैंने भयानक नदियों, खूँखार डाकुओं, स्वयं अपने
लोगों, विधर्मियों, नगरों, ग्रामों, समुद्रों और दिखावटी
बंधुओं के संकटों के बीच अनेक यात्राएँ की हैं। 27मैंने
कड़ा परिश्रम करके थकावट से चूर हो कर जीवन
जीया है। अनेक अवसरों पर मैं सो तक नहीं पाया हूँ।
भूखा और प्यासा रहा हूँ। प्राय: मुझे खाने तक को नहीं
मिल पाया है। बिना कपड़ों के ठण्ड में ठिठुरता रहा हूँ।
28और अब और अधिक क्या कहूँ? मुझ पर सभी
कलीसियाओं की चिंता का भार भी प्रतिदिन बना रहा
है। 29किसकी दुर्बलता मुझे शक्तिहीन नहीं कर देती है
और किसके पाप में प्रवृत्त होना मुझे बैचेन नहीं बना
डालताहै।

30यदि मुझे बढ़ चढ़कर बातें करनी ही हैं तो मैं उन
बातों को करूँगा जो मेरी दुर्बलता की हैं। 31परमेश्वर

और प्रभु यीशु का परम पिता जो सदा ही धन्य है,
जानता है कि मैं कोई झूठ नहीं बोल रहा हूँ। 32जब मैं
दमिश्क में था तो महाराजा अरितास के राज्यपाल ने
दमिश्क परघेरा डाल कर मुझे बंदी कर लेने का जतन
किया था। 33किन्तु मुझे नगर की चारदीवारी की खिड़की
से टोकरी में बैठाकर नीचे उतार दिया गया और मैं
उसके हाथों से बच निकला।

पौलुस पर प्रभु का विशेष अनुग्रह

12 अब तो मुझे गर्व करना ही होगा। इससे कुछ
मिलना नहीं है। किन्तु मैं तो प्रभु के दर्शनों
और प्रभु के दैवी संदेशों पर गर्व करता ही रहूँगा। 2मैं
मसीह में स्थित एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे
चौदह साल पहले (मैं नहीं जानता बस परमेश्वर ही
जानता है) देह सहित या देह रहित तीसरे स्वर्ग में उठा
लिया गया था। 3और मैं जानता हूँ कि इसी व्यक्ति को
(मैं नहीं जानता, बस परमेश्वर ही जानता है) बिना
शरीर के या शरीर सहित 4स्वर्गलोक में उठा लिया गया
था। और उसने अनिर्वचनीय शब्द सुने जिन्हें बोलने की
अनुमति मनुष्य को नहीं है। 5हाँ, ऐसे मनुष्य पर मैं
अभिमान करूँगा किन्तु स्वयं अपने पर, अपनी
दुर्बलताओं को छोड़कर अभिमान नहीं करूँगा। 6क्योंकि
यदि मैं अभिमान करने की सोचूँ तो भी मैं मूर्ख नहीं
बनूँगा क्योंकि तब मैं सत्य कह रहा होऊँगा। किन्तु
तुम्हें मैं इससे बचाता हूँ ताकि कोई मुझे जैसा करते
देखता है या कहते सुनता है, उससे अधिकश्रेय न दे।

7असाधारण दैवी संदेशों के कारण मुझे कोई गर्व न
हो जाये इसीलिये मुझे सालते रहने वाला एक काँटा भी
दे दिया है। जो शैतान का दूत है, वह मुझे दुखता रहता
है ताकि मुझे बहुत अधिक घमण्ड न हो जाये। 8काँटे
की इस समस्या के बारे में मैंने प्रभु से तीन बार प्रार्थना
की है कि वह इस काँटे को मुझमें से निकाल ले,
9किन्तु उसने मुझसे कह दिया है, "तेरे लिये मेरा अनुग्रह
पर्याप्त है क्योंकि निर्बलता में ही मेरी शक्ति सबसे
अधिक होती है, इसीलिये मैं अपनी निर्बलता पर प्रसन्नता
के साथ गर्व करता हूँ। ताकि मसीह की शक्ति मुझ में
रहे। 10इस प्रकार मसीह की ओर से मैं अपनी निर्बलताओं,
अपमानों, कठिनाइयों, यातनाओं और बाधाओं में आनन्द
लेता हूँ क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी शक्तिशाली
होता हूँ।

कुरिन्थियों के प्रति पौलुस का प्रेम

11मैं मूर्खों की तरह बतियाता रहा हूँ किन्तु ऐसा
करने को मुझे विवश तुमने किया। तुम्हें तो मेरी प्रशंसा
करनी चाहिये थी यद्यपि वैसे तो मैं कुछ नहीं हूँ पर
तुम्हारे उन "महाप्रेरितों" से मैं किसी प्रकार भी छोटा
नहीं हूँ। 12किसी को प्रेरित सिद्ध करने वाले आश्चर्य
पूर्ण संकेत, अदभुत कर्म और आश्चर्य कर्म भी तुम्हारे
बीच धीरज के साथ प्रकट किये गये हैं। मैंने हर प्रकार
की यातना झेली है। चाहे संकेत हो, चाहे कोई चमत्कार
या आश्चर्य कर्म 13तुम दूसरी कलीसियाओं से किस
दृष्टि से कम हो? सिवाय इसके कि मैं तुम पर किसी
प्रकार भी कभी भार नहीं बना हूँ? मुझे इस के लिए
क्षमा करो।

14देखो, तुम्हारे पास आने को अब मैं तीसरी बार
तैयार हूँ। पर मैं तुम पर किसी तरह का बोझ नहीं
बनूँगा। मुझे तुम्हारी सम्पत्तियों की नहीं तुम्हारी चाहत
है। क्योंकि बच्चों को अपने माता पिता के लिये कोई
बचत करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि अपने
बच्चों के लिये माता-पिता को ही बचत करनी होती है।
15जहाँ तक मेरी बात है, मेरे पास जो कुछ है, तुम्हारे
लिए प्रसन्नता के साथ खर्च करूँगा यहाँ तक कि अपने
आप को भी तुम्हारे लिए खर्च कर डालूँगा। यदि मैं
तुमसे अधिक प्रेम रखता हूँ, तो भला तुम मुझे कम
प्यार कैसे करोगे।

16हो सकता है, मैंने तुम पर कोई बड़ा बोझ न डाला
हो किन्तु (तुम्हारा कहना है) मैं कपटी था मैंने तुम्हें
अपनी चालाकी से फँसा लिया। 17क्या जिन लोगों को
मैंने तुम्हारे पास भेजा था, उनके द्वारा तुम्हें छला था?
नहीं! 18तितुस और उसके साथ हमारे भाई को मैंने
तुम्हारे पास भेजा था। क्या उसने तुम्हें कोई धोखा
दिया? नहीं क्या हम उसी निष्कपट आत्मा से नहीं
चलते रहे? क्या हम उन्हीं चरण चिह्नों पर नहीं चले?

19अब तुम क्या यह सोच रहे हो कि एक लम्बे समय
से हम तुम्हारे सामने अपना पक्ष रख रहे हैं। किन्तु हम
तो परमेश्वर के सामने मसीह के अनुयायी के रूप में
बोल रहे हैं। मेरे प्रिय मित्रो! हम जो कुछ भी कर रहे हैं,
वह तुम्हें आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए
है। 20क्योंकि मुझे भय है कि कहीं जब मैं तुम्हारे पास
आऊँ तो तुम्हें वैसा न पाऊँ, जैसा पाना चाहता हूँ और
तुम भी मुझे वैसा न पाओ जैसा मुझे पाना चाहते हो।
मुझे भय है कि तुम्हारे बीच मुझे कहीं आपसी झगड़े,
ईर्ष्या, क्रोधपूर्ण कहा-सुनी, व्यक्तिगत षड्यन्त्र, अपमान,
काना-फूसी, हेकड़पन और अव्यवस्था न मिले। 21मुझे
डर है कि जब मैं फिर तुमसे मिलने आऊँ तो तुम्हारे
सामने मेरा परमेश्वर कहीं मुझे लज्जित न करे; और
मुझे उन बहुतों के लिए विलाप न करना पड़े जिन्होंने
पहले पाप किये हैं और अपवित्रता, व्यभिचार तथा
भोग-विलास में डूबे रहने के लिये पछतावा नहीं किया
है।

अंतिम चेतावनी और नमस्कार

13 यह तीसरा अवसर है जब मैं तुम्हारे पास आरहा
हूँ। शास्त्र कहता है: "हर बात की पुष्टि, दो या

तीन गवाहियों की साक्षी पर की जायेगी।" 2जब दूसरी
बार मैं तुम्हारे साथ था, मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी और
अब जब मैं तुमसे दूर हूँ, मैं तुम्हें फिर चेतावनी देता हूँ
कि यदि मैं फिर तुम्हारे पास आया तो जिन्होंने पाप
किये हैं और जो पाप कर रहे हैं उन्हें और शेष दूसरे
लोगों को भी नहीं छोड़ूँगा। 3ऐसा मैं इसलिये कर रहा हूँ
कि तुम इस बात का प्रमाण चाहते हो कि मुझमें मसीह
बोलता है। वह तुम्हारे लिए निर्बल नहीं है, बल्कि समर्थ
है। 4यह सच है कि उसे उसकी दुर्बलता के कारण क्रूस
पर चढ़ाया गया किन्तु अब वह परमेश्वर की शक्ति के
कारण ही जी रहा है। यह भी सच है कि मसीह में स्थित
हम निर्बल हैं किन्तु तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर की
शक्ति के कारण हम उसके साथ जीयेंगे।

5यह देखने के लिए अपने आप को परखो कि क्या
तुम विश्वासपूर्वक जी रहे हो। अपनी जाँच पड़ताल
करो अथवा क्या तुम नहीं जानते कि वह यीशु मसीह
तुम्हारे भीतर ही है। यदि ऐसा नहीं है, तो तुम इस परीक्षा
में पूरे नहीं उतरे। 6मैं आशा करता हूँ कि तुम यह जान
जाओगे कि हम इस परीक्षा में किसी भी तरह विफल
नहीं हुए। 7हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम
कोई बुराई न करो। इसलिये नहीं कि हम इस परीक्षा में
खरे दिखाई दें, बल्कि इसलिए कि तुम वही करो जो
उचित है। चाहे हम इस परीक्षा में विफल हुए ही क्यों न
दिखाई दें। 8वास्तव में हम सत्य के विरुद्ध कुछ कर ही
नहीं सकते। हम तो जो करते हैं, सत्य के लिये ही करते
हैं। 9हमारी निर्बलता और तुम्हारी सबलता हमें प्रसन्न
करती है और हम इसी के लिये प्रार्थना करते रहते हैं
कि तुम दृढ़ से दृढ़तर बनो। 10इसीलिये तुमसे दूर रहते
हुए भी मैं इन बातों को तुम्हें लिख रहा हूँ ताकि जब मैं
तुम्हारे बीच होऊँतो मुझे प्रभु के द्वारा दिये गये अधिकार
से तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे
आध्यात्मिक विकास के लिए तुम्हारे साथ कठोरता न
बरतनी पड़े।

11अब हे भाइयो, मैं तुमसे विदा लेता हूँ। अपने आचरण
ठीक रखो। वैसा ही करते रहो जैसा करने को मैंने
कहा है। एक जैसा सोचो। शांतिपूर्वक रहो। जिससे प्रेम
और शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

12पवित्र चुम्बन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो।
13सभी संतों का तुम्हें नमस्कार।

14तुम पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह,परमेश्वर का
प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ
रहे।